श्रीनिम्बार्क वैष्णव परिषद् नेपाल

अत्यावश्यक विज्ञप्ति

प्रा. हरिशरण उपाध्याय

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीनिम्बार्क वैष्णव परिषद् नेपाल

अत्यावश्यक विज्ञप्ति

प्रा० हरिशरण उपाध्याय

व्याकरण, वेदान्ताचार्य

पूर्व प्राचार्य–

'क' वर्गीय, श्रीनिम्बार्क संस्कृत महाविद्यालय

वृन्दावन, मथुरा, यू० पी०

संस्थापक सदस्य – संरक्षक

श्रीनिम्बार्क दर्शन केन्द्र, गैंडाकोट-१, नवलपरासी

प्रमुख संरक्षक–

श्रीनिम्बार्क वैष्णव परिषद्, नेपाल

अध्यक्ष–

श्रीराधाकृष्ण देवस्थान, टंगालख काठमाडौं

वि० सं० २०६६ श्रीनिम्बार्काब्द ५१०८

श्रीनिम्बार्क वैष्णव परिषद् नेपाल

अत्यावश्यक विज्ञप्ति

सूचना / विज्ञप्ति क्यों ?

सज्जनवृन्द !

शास्त्रों के अनुसार

न सभां प्रविशेत् प्राज्ञः सभ्यदोषाननुस्मरन् ।

अब्रुबन्नब्रुवन्नज्ञो नरः किल्विषमश्नुते ।।

(श्रीमद्भागवत)

अर्थः-सभ्य होने पर भी दोषी जानने के बाद उन दोषी लोगों की सभा में ज्ञानी पुरुष को जाना ही नहीं चाहिए। क्योंकि सभा में जाकर दोषी जो सभ्य है, प्राज्ञ पुरुष उनके दोष नहीं बता सकते हैं कि वे दोषी हैं, यह जानते हुए भी उनकी प्रशंसा करने वाले (अथवा दोषी है यह जानते हुए) भी अनजान होकर जैसे उन्हें तो कुछ पता नहीं है, ऐसे बैठता है तो वो प्राज्ञ पुरुष पाप का भागी होगा।

सज्जन महानुभाव!

निम्बार्क वैष्णव सम्प्रदाय अनादि वैदिक सनातन सत्सम्प्रदाय के रूप में प्रतिष्ठित शास्त्र समन्वय व सामन्जस्य का परिपोषक तथा सामाजिक सद्भाव का पक्षधर एवं सदाचार प्रधान सत्सम्प्रदाय है।

यह सम्प्रदाय भगवान् श्रीहंस द्वारा प्रारम्भ हुआ है। भगवान्

श्रीहंस द्वारा महर्षि श्रीसनकादिक, सनकादिक से देवर्षि नारद, श्रीनारद द्वारा श्रीनिम्बार्काचार्य होते हुए अद्यावधि बावन आचार्यों की संख्या में अवस्थित है। इस ऐतिहासिक परम्परा में कतिपय आचार्यों के नाम इतिहास के पन्नों में न आने का तथ्य साक्षी के द्वारा सिद्ध हो गया है। इस तरह इस सम्प्रदाय की परम्परा अति प्राचीन है।

इस सम्प्रदाय की वेदादि शास्त्र सम्मत यह अवधारणायें हैं । इसकी आचार संहिता है--

१. परम्परागत मर्यादा है   २. नियम है
३. अनुशासन प्रणाली है   ४. कर्म पद्धति है
५. उपासना विधि है   ६. दार्शनिक सिद्धान्त है

इनके अनुसार जीवन पद्धति बनाने वालों का नाम अहिंसावादी निम्बार्क वैष्णव बनना है। इसके विपरीत स्वेच्छाचार या स्वेच्छा से व्यवहार करना नितान्त मर्यादा का उल्लंघन करना है, राष्ट्र में स्थापित सभी संघ, संस्था, संघटन, समिति समूह, परिषद्, दलगत राजनैतिक पार्टियों के भी अपने-अपने निर्धारित नियम और विधान, आचार संहिता होती है।

उनके अनुयायी व उत्तरदायी सदस्य व कार्यकर्ता को तत् संघ-संस्थाओं का निर्धारित नियम के अनुसार कार्य करना पड़ता है। तदनुसार बोलना पड़ता है। निर्धारित नियम की सीमा उल्लंघन करके कार्य करना या बोलने आदि की छूट नहीं होती। सब सम्बन्धित व्यक्तियों को नियम एवं आचार संहिता तथा मर्यादा के अन्दर रहना पड़ता है। उसमें भी धार्मिक जगत् के व्यक्तियों को

कितना सावधान, कितना मर्यादित, कितना अनुशासित होना चाहिए। वेदादि शास्त्र द्वारा प्रतिपादित विधि विधान से बताया हुआ है। धार्मिक जगत् का दम्भ महत्वाकांक्षा और विप्रलिप्सा (ब्राह्मण की तरह प्राप्त करने की इच्छा) का स्थान नहीं होना चाहिए।

किन्तु अभी नेपाल में वैदिक सनातन निम्बार्क वैष्णव धर्म जैसा समरसतापूर्ण उदारवादी परम्प्रा रही हुई निम्बार्क वैष्णव सम्प्रदाय के व्यक्ति दम्भ व महत्वाकांक्षा की पराकाष्ठा में पहुँचकर निम्बार्क वैष्णव सम्प्रदाय की परम्परागत आचार संहिता और मर्यादा का सीधा उल्लंघन करके स्वेच्छाचार का नग्न नृत्य दिखाने लगे हैं। इस सम्बन्ध में निम्बार्क सम्प्रदाय परिषद् ने इसके पहले भी विज्ञप्ति के द्वारा सावधान करवाया था।

किन्तु अभी नेपाल का निम्बार्क वैष्णव परिषद् मात्र को नहीं, नेपाल सरकार के सभी अंग नेपाल के दिग्गज विद्वान्, सन्त-महन्त, मठाधीश सहित सम्पूर्ण नेपाली जनता को भी गुमराह कराने वाले तत्वों की आड़ में दम्भ व महत्वाकांक्षा का प्रदर्शन हो रहा है। यह इतनी बड़ी बात है जिसके द्वारा नेपाल राष्ट्र, सरकार, जनता, प्रख्यात विद्वान्, सन्त-महन्त और मठाधीशों का स्वाभिमान मिट्टी में मिलने जा रहा है। नेपाल एक सार्वभौम सत्ता सम्पन्न जनक याज्ञवल्क्य का वैदिक कालीन राष्ट्र है। नेपाल की प्रतिष्ठा और किसी राष्ट्र की प्रतिष्ठा से कम नहीं हैं। अभी विश्व में गिने जाने वाले सम्पूर्ण राष्ट्रों में नेपाल का नाम प्राथमिकता के साथ लिया जाता है नेपाल सरकार सम्पूर्ण विश्व के सरकार की समकक्षी है, अपने सांस्कृतिक गौरव व सच्चाई व स्वाभिमान से विश्व के समक्ष

खड़ा है। किसी के सामने बिल्कुल नहीं झुकता, नेपाल के पास में किसी भी वस्तु या विद्या की कमी नहीं है। कमी है तो प्रयोग की कमी है। नेपाल स्वयं में सर्वगुण सम्पन्न सर्वशक्ति सम्पन्न राष्ट्र है। यह नेपाल पण्डागिरि में चलने वाला राष्ट्र नहीं। कोई भी इस राष्ट्र को पण्डागिरि करके नहीं झुका सकता। राष्ट्र संचालक सरकार को गुमराह करना एक बड़ा धोखा देना है। जो अक्षम्य अपराध माना जा सकता है। अधिकार का दुरुपयोग करके नेपाल के स्वाभिमान व प्रतिष्ठा को धराशायी नहीं कर सकते। नेपाल सरकार के रोम मात्र न गिनकर उपहास का पात्र या खिलौना जैसा नहीं बना सकते।

धर्म रक्षार्थ भगवान् का अवतार-

वेद प्रमाणित परम्परा पर आधारित सनातन आचार संहिता मूलक धर्म मर्यादा की रक्षा के लिए भगवान् युग-युग में अवतार लिया करते हैं। किन्तु अवतार होने के बाद युग की लम्बी अवधि के कारण धर्म में विचलन होने लगा। इसलिए धर्म की रक्षा के लिए भगवान् की ही इच्छा से भगवान् के द्वारा भगवद् विभूति के रूप में धर्माचार्यों का आविर्भाव होता रहता है। ऐसी विभूतियों में प्रमुख श्रीनिम्बार्काचार्य, श्रीशंकराचार्य, श्रीरामा-नुजाचार्य आदि हैं।

जगद्गुरु की प्रामाणिक परम्परा-

सच्चे अर्थों में यदि कहा जाय तो भगवान् श्रीकृष्ण ही जगद्गुरु हैं। जगत् सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के अभिन्ननिमित्तोपादान कारण होने के साथ भगवान् श्रीकृष्ण ब्रह्माण्ड की स्थिति-प्रवृति नियमन

की व्यवस्था जैसी है उसी तरह करने के लिए वेद रूप संविधान के उपदेशक भी है।

"यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्व यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै" बहुभवन की इच्छा से स्व संकल्प द्वारा नाभि कमल में सृष्टि विस्तार करने वाले विधाता को प्रकट कराके वेदरूप संविधान के उपदेशक हुये थे। अतः भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् होने पर भी जगत् के कल्याण के लिए परम ज्ञान देने के अर्थ में गुरु बने हुए है। अतः जगदीश्वर भगवान् श्रीकृष्ण सच्चे अर्थ में जगद्गुरु है।

"कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्"

मैं जगदीश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की वन्दना करता हूँ।

जगद्गुरु कौन हो सकता है और कैसे ?

१. जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य :-द्वापरान्त तक धर्म व्यवस्था चली हुई थी। भगवान् श्रीकृष्ण के इस धरती को छोड़ने के बाद कलयुग का प्रभाव बढा। धर्म में विचलन आने के बाद भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र को धर्म व्यवस्था सुधारने के लिए आचार्य के रूप में प्रकट होने की आज्ञा दी थी। तदनुसार दक्षिण भारत के वैदुर्य पतन (मूंगी-पैठण) में अरुण मुनि व माता जयन्ती देवी के पुत्र के रूप में निम्बादित्य श्रीनिम्बार्क उत्पन्न हुये। तपःसिद्ध श्रीनिम्बार्क के प्रति न केवल असुरों का अपितु दिग्भ्रान्त विद्वानों का भी घेराव हुआ था किन्तु तपोबल व विद्याबल की संयुक्त शक्ति द्वारा उक्त आक्रमणकारी दोनों वर्गो को परास्त करके तत्कालिक सम्पूर्ण भारत में वेद विहित कर्म उपासना भक्ति व ज्ञान की विजयश्री विस्तार करने की बात सर्वविदित है। लोकाचार्य सनकादिकों व

देवर्षि नारद द्वारा प्राप्त किये हुए छान्दोग्य ज्ञान ही निम्बार्क का अमोघ अस्त्र था। ऐसे उनकी दिग्विजय करके जगद्गुरुत्व की प्राप्ति इतिहास साक्षी है।

इतिहास किसी द्वारा परोक्ष नहीं है। इस निम्बार्क वैष्णव सम्प्रदाय में परम्परागत रूप में उत्तराधिकारी प्रणाली चली आ रही है यह सम्प्रदाय वृद्धों द्वारा स्वीकार की हुई पद्धति है। सबको स्वीकार करना पड़ेगा यही मर्यादा है, जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य परम्परागत पीठ के उत्तराधिकारी ही जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य पीठाधीश कहला सकते हैं ये परम्प्रा अद्यावधि अक्षुण्ण रही है। वर्तमान समय में जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज मात्र हैं ।

जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य-

यह तो सर्वविदित है कि श्रीभूतभावन श्रीशंकरजी ही धर्म मर्यादा की रक्षा के लिए श्रीशंकराचार्य के रूप में प्रकट हुए हैं। श्रीशंकराचार्य का आविर्भाव होने के समय में वैदिक सनातन धर्म व तदनुकूल सदाचार में बड़ी अनास्था हो चुकी थी। मानव समाज में चेतन ईश्वर के अस्तित्व के प्रति सन्देह मात्र ही नहीं, नकारात्मक प्रभाव पड़ चुका था। धर्माचरण एक ढोंग माना जाता था। दुराचार, वामाचार, स्वेच्छाचार का बोलबाला था। समाज को मत-मतान्तर के जाल में फँसाया हुआ था। जिसके द्वारा वैदिक सनातन धर्भ का लुप्त होने का खतरा आ चुका था। बड़े-बड़े विद्वानों की भी मति भ्रमित हो चुकी थी। ऐसी जटिल अवस्था में श्रीशंकराचार्यजी प्रकट हुए थे।

श्रीशंकराचार्यजी ने वैदिक सनातन धर्म की स्थापना के लिए महासंकल्प किया, फलस्वरूप दिगन्तव्यापी शास्त्रार्थ करने वाला महान् अभियान चलाया तत्कालीन भारत को दक्षिण एशिया में वैदिक सनातन धर्म की विजयध्वजा फैलाने के उद्देश्य से लेकर योगीश्वर श्रीशंकराचार्यजी राष्ट्र भ्रमण करने लगे। इस भ्रमण के सिलसिले में शास्त्रार्थ द्वारा दिग्विजय करने के क्रम में सशर्त शास्त्रार्थ होता था। जो परास्त होगा वो विजेता का शिष्य बनने या होने की शर्त रखी जाती थी ऐसें तत्कालीन भारतवर्ष के विभिन्न मतावलम्बी दिग्गज माने जाने वाले मण्डन मिश्र जैसे उद्भट विद्वानों को शास्त्रार्थ में परास्त करके वैदिक वेदान्त का विजय वैजयन्ती को विश्व में व्याप्त करवाया था। शास्त्रार्थ में परास्त होते हुए मिश्र जैसे अनेक विद्वान् शर्त के अनुसार श्रीशंकराचार्यजी के सन्यासी शिष्य बने। सभी ने वैदिक आचार पद्धति के अवलम्बन करने के साथ "ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या" कहते हुए औपनिषद सिद्धान्त को हृदय से ही सहर्ष स्वीकार किया। श्रीशंकराचार्यजी ने शास्त्रार्थ द्वारा दिग्विजय करने के क्रम में किये हुए कटु अनुभव के अनुसार अपने द्वारा स्थापित किया हुआ वैदिक सनातन आचार चिरकाल तक अक्षुण्ण होकर रहे, इस उद्देश्य से भारत के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों दिशाओं में शंकर पीठों की स्थापना की, दिग्गज विद्वान्-सन्यासी शिष्यों के धर्म रक्षार्थ उत्तराधिकारी के रूप में नियुक्त किये थे। अद्यावधि जगद्गुरु श्रीशंकराचार्यजी के स्थापना किए हुए उन पीठों में उत्तराधिकारी के रूप में आसीन होने वाले महापुरुष भी परम्परागत रूप में जगद्गुरु श्रीशंकराचार्यजी को

उत्तराधिकारी मानते हुए वे लोग भी जगद्‌गुरु श्रीशंकराचार्यपीठाधीश्वर कहलायेंगे, छोटे शब्दों में कहा जाय तो जगद्‌गुरु शंकराचार्य या श्रीशंकराचार्य माने जाते हैं।

यह है हजारों वर्षों से परम्परागत रूप से चली आई हुई जगद्‌गुरु कहला सकने वाले प्रमाणिक आधार।

विद्यागुरु-

शिष्य परम्परा में भी उत्तराधिकारी नियम होने का प्रमाण मिलता है। जो उत्तराधिकारी पद्धति की पुष्टि करता है। प्रस्तुत है महावैयाकरण पतञ्जलि का उदाहरण-

१. **महावैयाकरण पतञ्जलि**-योग, वैद्यक, वैयाकरण महाभाष्य के प्रणेता श्रीपतञ्जलि ने सूत्र वार्तिकों के व्याख्यान के क्रम में शब्द साधन करने पर लोक व्यवहार में घटित प्रशस्त उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। देखिए रामाय शब्द सिद्धि का प्रसंग-

''लोके यो यस्य प्रसङ्गे भवति लभतेऽसौतत्कार्याणि, तद् यथा उपाध्यायस्य शिष्यः,गुरौ यत्कार्यं तद्‌गुरु पुत्रेति''

अर्थात् लोक व्यवहार में भी देखा जा सकता है जो जिसके स्थान में बैठता है वही उसी के सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त करता है। यदि उपाध्याय गुरु के शिष्य अपने गुरु के स्थान पर बैठे तो, गुरु ने प्राप्त किया हुआ मान, सम्मान, सम्पूर्ण अधिकार उसको मिलेगा। इसी तरह यदि किसी के पिता गुरु हैं तो पिता के स्थान पर बैठने योग्य पुत्र को भी पिता के सम्पूर्ण अधिकार मिलेंगे इस प्रसंग को और स्पष्ट करते हुए उद्योतकार कहते हैं।

''तत् स्थानापन्नस्तद् धर्मं लभते''

गुरु के स्थान में बैठने योग्य शिष्य को भी गुरुत्व अर्थात् गुरु में निहित सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त हो सकेगा। शिष्य भी गुरु ही कहलाएगा।

"**तुल्यन्यायात्**"-श्रीशंकराचार्यजी जैसे जगद्गुरुओं के स्थान पर बैठने या बैठ सकने वाले उत्तराधिकारी शिष्य भी जगद्गुरु ही माने जायेंगे।

आज के सन्दर्भ में यदि कोई जगद्गुरु बनना चाहने वाला इच्छुक व्यक्ति है तो या तो परम्परागत श्रीशंकराचार्यजी जैसे जगद्गुरु पीठ के उत्तराधिकारी होना चाहिये, उन्होंने दक्षिण, एशिया के सम्पूर्ण विद्वानों को शास्त्रार्थ में परास्त किया। इसी तरह पराजित विद्वानों के हस्ताक्षरित प्रमाण पत्र नेपाल राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत करना पड़ेगा अन्यथा आज कोई भी व्यक्ति जगद्गुरु नहीं बन सकता, नहीं कोई संघ, संस्था, समिति सभा संघटन परिषद् समूहों को जगद्गुरु बनाने का अधिकार है।

सज्जनवृन्द !

ऐसे जगद्गुरु कौन बन सकता हैं या कैसे बन सकता है, कहने वाले अकाट्य प्रमाण व परम्परागत पद्धति को इस लेख के द्वारा स्पष्ट किया है। गम्भीर होकर पढिए, सुनिए और समझिए। उसके बाद निर्णय कीजिए यदि कोई नेपाल में जगद्गुरु है तो वह सच्चे अर्थों में जगद्गुरु है कि नहीं, निर्णय कीजिए। "कौवा कान ले गया कहने पर कौवे के पीछे दौड़ने से तो अच्छा अपना कान छूना या देखना उचित होगा।"

महानुभाव!

मेरे पास अनेक फोन आते हैं कि सारे जानने वालों व कही साधारण निम्बार्क वैष्णवों द्वारा प्रश्न किये गये हैं। उसी तरह वैष्णवेतर सज्जन महानुभावों द्वारा भी कुछ समर्थन में कुछ विपक्ष में जिज्ञासा ज्यादा से ज्यादा लगी हुई है। जिज्ञासा का विषय है, काशी पण्डित सभा द्वारा बनाये हुए और भेजे हुए तथाकथित जगद्गुरु के सम्बन्ध में।

१-काशी द्वारा जगद्गुरु बन कर आये हुए व्यक्ति निम्बार्क वैष्णव होने से निम्बार्क वैष्णव भी बड़े भ्रम में पड़े हुए है। क्या निम्बार्क वैष्णवों को उन्हें ही जगद्गुरु मानने के लिए बाध्य होना पड़ेगा और ऐसे भी प्रश्न आये हुए है।

२-काशी पण्डित सभा द्वारा जगद्गुरु बना कर नेपाल में भेजे जाने पर एक ओर हर्षोल्लास है तो दूसरी ओर यह सुनाई देता है सम्प्रदाय की परम्परा को जानने वाले कई व्यक्ति उन लोगों को जगद्गुरु मानने को तैयार नहीं है। जबकि नेपाल सरकार ने मानो किसी भी परराष्ट्र के राष्ट्रपति का स्वागत करके सेना, प्रहरी आई जी पी, सशस्त्र प्रहरी संचालित करके मन्त्री सचिव सहित बैण्डबाजे और रमझम के साथ भव्य स्वागत किए परिप्रेक्ष्य में, मात्र इतना ही नहीं सरकारी शान के साथ जिले-जिले में भ्रमण करवा कर स्वागत अभिनन्दन किए हुए अवस्था में अब बाकी क्या रहा हैं ?

सज्जनवृन्द !

आप लोग ये बात स्पष्ट समझें कि काशी पण्डित सभा के द्वारा बनाया हुआ कोई भी असली जगद्गुरु नहीं हो सकता, खास

करके निम्बार्क वैष्णव कोई भी किसी भी भ्रम में नहीं पड़े अनुरोध है कि निम्बार्क वैष्णव परिषद् नेपाल ऐसे लोगों को जगद्गुरु नहीं मानता। निम्बार्क वैष्णव सम्प्रदाय के परम्परागत मर्यादा का सीधा उल्लंघन करके स्वेच्छानुसार दम्भ प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति सम्प्रदाय को कभी भी स्वीकार नहीं है। काशी पण्डित सभा के द्वारा थोपा गया जगद्गुरु मानना निम्बार्क वैष्णव परिषद् नेपाल बाध्य नहीं है।

अब रही नेपाल सरकार की बात :- तथाकथित जगद्गुरु बनने के सम्बन्ध में प्राज्ञ दधिराज सुवेदी द्वारा लिखित व सम्पादित जगद्गुरु बालसन्त पुस्तक पढने के बाद यह पंक्तिकार तो शर्म से पानी-पानी हो गया क्योंकि मानो राष्ट्रपति की सिफारिस में नेपाल सरकार ने मन्त्री परिषद् द्वारा संसद में निर्णय कराके हमें (नेपाल सरकार को) जल्दी जगद्गुरु चाहिये अतः जगद्गुरु बनाके भेज दीजिये काशी पण्डित सभा के साथ अनुरोध समझौता किया जैसी हालात में नेपाल के राष्ट्रपति डा० रामवरण यादव को काशी में कार्यरत दो जन (लोग) नेपाली ने तथाकथित जगद्गुरु का हस्तान्तरण किया हुआ दृश्य उस पुस्तक में प्रकाशित है। साथ ही उन दो नेपालियों के समक्ष राष्ट्रपति ने तो विवशता दिखाई वह बात भी उल्लेखित है। हमने तो नेपाल सरकार को विश्व के सरकार की हैसियत में समझा था। स्वयं को नेपाली होने में स्वाभिमान व गौरव जैसा मानते थे। किन्तु नेपाल सरकार का स्तर काशी के पण्डितों के स्तर से भी नीचा गिर चूका है।

यह बात हमें पता नहीं थी कि नेपाल सरकार को काशी के पण्डितों का कहना या कही हुई बात को कुछ भी मानना पड़े

यह बाध्यता क्यूं? नेपाल सरकार ने काशी के पण्डितों की सभा के साथ समझौता किया हुआ नहीं है तो जगद्‌गुरु के हस्तान्तरण करने का अर्थ क्या होता है ?

सज्जन महानुभाव !

इस सम्बन्ध में नेपाल सरकार को गुमराह कराया है। किसी विश्वास पात्र ने नेपाल सरकार को धोखा दिया है, शान्ति व संविधान के निर्माण की प्रक्रिया में उलझा रहा व दूसरी पार्टियों की वैशाखी बनकर खडा रहा नेपाल सरकार की नाजूक अवस्था द्वारा किसी स्वार्थ सिद्ध करने के अवसर का इन्तजार करके बैठे हुए अपने ही लोग सरकार को गुमराह करने में सफल हुए हैं जैसा लगता है। ऐसा नहीं हुआ है तो नेपाल सरकार कैसे जाल में पड़ी। अरे यह तो फँस गई ?

नेपाली में एक बात है या कहावत है कोई व्यक्ति हाथ में कुल्हाड़ी लेकर वन में प्रवेश किया या करता है तो उसको देखने वाला पेड़ कहता है, देखो भाई कुल्हाड़ी आई है, कुल्हाड़ी आई है, दूसरा पेड़ कहता है या पूछता है फिर से देखो कुल्हाड़ी में हमारी जात का कोई बन्धु लगा हुआ है कि नहीं, यदि नहीं लगा है तो चिन्ता करने की कोई बात नहीं और लगा हुआ है तो सावधान होना पड़ेगा, नहीं तो धोखा हो सकता है। वैसा ही नेपाल सरकार को हुआ है। ऐसा लगता हैं कहाँ भारतीय केन्द्रीय सरकार की समकक्षी नेपाल सरकार और कहाँ दो नेपाली व्यक्तियों की काशी पण्डित सभा, नेपाल सरकार की गरिमा व प्रतिष्ठा को धक्का लगने या पहुँचाने जैसा काम किसने किया हैं ? इसकी जाँच होनी चाहिए

पता लगाना चाहिए। यह तो नेपाल सरकार को भी सोचना चाहिए था। नेपाल में कल्पना भी नहीं हुई कि नेपाल के दिग्गज विद्वान् व सन्त-महन्तों की परवाह नहीं करके, गिनती नहीं करके अकस्मात् (अचानक) छिपकर प्रशस्त दक्षिणा के भरोसे सरकार की समकक्षी जैसा मानने वाले राजनैतिक बड़े नेता की हैसियत में राष्ट्रपति को मानना ही पड़ेगा ऐसी बाध्यता के साथ काशी द्वारा लेकर आये हुए तथाकथित जगद्गुरु को अचानक राष्ट्रपति तक पहुँचाने पर राष्ट्रपति व नेपाल सरकार को भी आश्चर्य होना चाहिये या नहीं ? हमको लगता है कि ये नेपाल सरकार की कमी है। नेपाल सरकार को ठगना या धोखा देना कितना जानते हैं? स्वयं समाचार या सुर्खियों में आने के लिए ऐसी असम्भव बात एक हीरों के हार व ९२ लाख रुपये रखा हुआ बैग मिला अनुजा ने उसके बारे में सबको बताया रात की नौ बजे भी बधाई मिली उनका बड़ा प्रचार हुआ। किन्तु यह बात सुर्खियों में आने के लिए कही गई मतलब सब झूठ थी। काशी पण्डित सभा द्वारा मानो जगद्गुरु के राजनैतिक दरबन्दी (दरबन्दी का अर्थ-तनख्वाह निश्चित की जाती है दर निश्चित कर दी जाती है, निश्चित वेतन) थोप कर लाए जैसे हिसाब से सरकार के उच्च पदों पर स्थित अधिकारियों का बैण्ड-बाजा के साथ तामझाम करके स्वागत करने जाने से पूर्व यह बात सोचनी चाहिये कि नहीं।

१. नेपाल को जगद्गुरु क्यूं ?

२. जगद्गुरु चाहिये तो नेपाल ही समर्थ है कि नहीं ?

३. जगद्गुरु कैसे बनते हैं या बनाते हैं ?

४. जगद्गुरु बनाने के लिए अधिकृत संस्था कौनसी हैं ?

५. जगद्गुरु बनने के लिए ऐतिहासिक परम्परा कौनसी हैं ?

६. जगद्गुरु बनने या बनाने के लिए शास्त्रीय योग्यता कितनी चाहिए।

७. किसी संस्था के द्वारा अनाधिकार चेष्टा करके बनाये हुए तथाकथित जगद्गुरु को परम्परागत असली या वैध जगद्गुरुओं का मान्यता दिया हुआ इतिहास है कि नहीं ?

८. जिसने जगद्गुरु बनाया हो उसने प्राचीन परम्परागत जगद्गुरु से अनुमोदन कराया हुआ हस्ताक्षरित पत्र लाया है या नहीं?

९. जगद्गुरु राजनैतिक नेता है कि नहीं ?

१०. जगद्गुरु नकली सकली छुड़ाने का प्रमाणिक आधार क्या हैं? जानना चाहिए कि नहीं ?

इत्यादि बातों में सोच-विचार कर सरकार को समझकर या जानकर मात्र ही सुहाने वाले काम करने चाहिए।

एक पल के लिए :- काशी पण्डित सभा में आबद्ध काशी के सम्पूर्ण विद्वानों को श्रीशंकराचार्यजी ने जैसे शास्त्रार्थ में परास्त करके उन्हीं या उनके ही पराजित होने का हस्ताक्षरित प्रमाण पत्र लाया गया था ? ऐसा प्रमाण पत्र लाकर नेपाल सरकार प्रभावित हुई है या हो गई है ?

१. क्या काशी पण्डित सभा जगद्गुरु बनाने की कम्पनी है।

२. क्या काशी पण्डित सभा जगद्गुरु बनाने का कारखाना है।

३. काशी पण्डित सभा के द्वारा बनाये हुए कौनसे जगद्गुरु परम्परागत जगद्गुरु श्रीशंकराचार्यों की पंक्ति में मान्य हैं।

उत्तर अपेक्षित है :- यदि काशी पण्डित सभा की स्थापना काल की गरिमा को सुरक्षित रखना चाहता है तो उसको झूठी खेती करना शोभा नहीं देता या नहीं सुहाता।

सज्जनवृन्द ! काशी विद्यानगरी है, इसमें सन्देह नहीं है या कोई शंका नहीं है, किन्तु आज विद्या ने काशी से विदा ले ली जैसा लगता है कोई जमाना था जब बाल शास्त्री रानडे, शिवकुमार शास्त्री, दामोदर शास्त्री मोटाके, तात्या शास्त्री, जयदेव मिश्र जैसे उद्‌भट विद्वान् थे उसके बाद भी कुवेरनाथ शुक्ल, मुरलीधर मिश्रा, बाल कृष्ण पाञ्चौनली, हरिराम शुक्ल, अनन्त शास्त्री फड़के, बद्रीनाथ शुक्ल म० म० गोपीनाथ, कविराज म० म० गिरिधर शर्मा चतुर्वेद नीलमोधाचार्य, व्रजमोहन दीक्षित सभापति शर्मोपाध्याय वासुदेव मिश्र, रामप्रीति शास्त्री आदि भारतीय विद्वान् व हमारे नेपाल के नित्यानन्द पन्त, कुलचन्द गौतम, सोमनाथ सिग्देल तथा पद्मप्रसाद भट्टराई जैसे मूर्धन्य विद्वान् काशी की उपज हैं, उस समय की काशी विद्यानगरी काशी ही थी। उस समय भारत के कोई ऐसे न्याय शास्त्र के विद्वान् नहीं थे जो पद्मप्रसाद भट्टराई से न्यायशास्त्र नहीं पढे हों। होने को तो अभी भी वैसे पाण्डित्यपूर्ण विद्वान् होंगे किन्तु वे विद्वान् लोग चमक-दमक, चटर-पटर दिखाने, अपने पैरों तले वाले विद्वानों के बहुमत से सच्चे विद्वान् ओझल में पड़े हुए हैं। काशी पण्डित सभा ऐसों से घिरा हुआ हो सकता है, सच्चे विद्वान् काशी पण्डित सभा की कार्यकारिणी में होते हैं तो वैसे सच्चे विद्वानों द्वारा ऐसी अनाधिकार चेष्टा नहीं होती अभी काशी पण्डित सभा को जगद्‌गुरु बनाने का अनाधिकार चेष्टा से नेपाल की

तो प्रतिष्ठा ही नहीं रही। नेपाल सरकार उपहास का पात्र बनी हुई हैं। काशी पण्डित सभा की भी कलई या पोल खुलने वाली है या खुल गई है। किन्तु नेपाल सरकार को काशी पण्डित सभा की आज्ञा को शिरोधार्य करनी ही पड़े ऐसी क्या बाध्यता है? कल परसों दूसरे लोग भी इसके द्वारा या इससे फायदा लेने का काम नहीं होगा नहीं कहा जा सकता। उसके द्वारा किसी को भी सर्वोच्च पदधारी बनाकर भेज ही देगा, यह भी जटिल कौतुहल का विषय बनने जारहा हैं, पचास वर्ष तक भारत के प्रवास के दौरान इस पंक्तिकार को भी ज्यादा ही अनुभव हुआ है। इसको भी जानकारी है भारत में भी महत्वाकांक्षी व दम्भियों की कमी नहीं है। नकली जगद्गुरुओं की भी कमी नहीं। लोकतन्त्र में लेखन स्वतन्त्रता मौलिक अधिकार है। जानबूझकर मनचाहे विशेषण लगाने, मनचाही उपाधि लिखने जगद्गुरु बनने स्वयंसिद्ध भगवान् बोलने की तक बात लिखकर सीधा-साधा सर्वसाधारण जनता की आँखों में धूल डालने में सफल हुए, ऐसा लगता हैं भारत सरकार को तो पता है असली जगद्गुरु सरकारी अधिकारी नहीं होता है। जगद्गुरु का स्वागत सांस्कृतिक परम्परा पर आधारित होता है ।

सज्जनवृन्द! नेपाल के परिप्रेक्ष्य में एक तरफ राष्ट्र को धर्म निरपेक्ष घोषित करने और दूसरी तरफ नेपाल सरकार के नक्कली ही सही जगद्गुरु घोषणा करना यह विरोधाभास पूर्ण आश्चर्यजनक विडम्बना नहीं है तो क्या है ? जो भी हो समग्र में कहने पर काशी पण्डित सभा द्वारा बनाया हुआ जगद्गुरु कदापि मान्य नहीं होगा। सरकार को भी अपनी हैसियत खोकर नीचे गिरना नहीं चाहिये।

दधिराज सुवेदी के द्वारा लिखी पुस्तक के अनुसार विगत कुछ वर्षों से जगद्गुरु की खोज में प्रयासरत काशी पण्डित सभा ने भारत में तो पात्र नहीं मिला किन्तु नेपाल में एक व्यक्ति मिले तो काशी की तीसरी बैठक में बहुत प्रयासों से सम्मान करने का निर्णय हुआ। ऐसा कहा गया।

इसका मतलब क्या है--

भारत प्रवास के समय यह पंक्तिकार भारत सरकार को भी यथार्थ सुझाव दिया करता था। यही कारण है भारत में रहते हुए भी सन् १९७६ में प्रधानमन्त्री श्रीमति इन्दिरा गांधी द्वारा घोषणा किए संकट काल के समय बीस सूत्री व संजय गाँधी के चार सूत्री कार्यक्रम के बीच परिवार नियोजन जटिल था। प्रत्येक ३ महिने में परिवार नियोजन का एक केश भारत के प्रत्येक कर्मचारी को देना ही पड़ता था, ऐसी बाध्यता थी। अन्यथा कर्मचारी की तनख्वाह रोकने की अनिवार्यता थी। केश (मामला) देने के मध्य में पंक्तिकार भी था। किन्तु इसके सहयोगी प्राध्यापकों के रोकने पर भी ही बड़ा साहस करके श्रीमति गाँधी को 'कटु सत्य पत्र लिखकर ५ मार्च १९७६ के दिन प्रेषित किया। फलस्वरूप पत्र की गम्भीरता को ध्यान देकर स्वयं पढकर समझ-बुझ कर उक्त प्रसंग में रोकी गई पूरे भारत के कर्मचारियों का वेतन दिलवाया गया। ११ मार्च १९७६ के दिन श्रीमती गाँधी द्वारा हस्ताक्षरित पत्र पंक्तिकार को प्राप्त हुआ था।

पत्र की प्रतिलिपि--

एक क्षण के लिए काशी पण्डित सभा द्वारा तथा कथित जगद्गुरु उपाधि मिली हुई हो तो अपने आप ही लिखके या लिखकर चलने से हो जाता क्यों सरकार को धूल झोकनी पड़ी? जैसे भारत के नक्कलियों ने किया है वैसा ही करने से हो सकता था।

नेपाल सरकार के साथ निम्बार्क वैष्णव परिषद्
नेपाल की माँग

राष्ट्र को गुमराह करने वाले, राष्ट्र की प्रतिष्ठा के प्रति दुष्प्रभाव करने वाले तत्वों को पता लगाकर जन समक्ष लाने के लिए छानबीन आयोग का गठन किया जाय। निम्बार्क वैष्णव परिषद् नेपाल इस सम्बन्ध में बहस करने की चाह में तैयार है। असली या सच्चे व्यक्ति का सच्चे या असली व्यक्ति के साथ व नकली व्यक्तियों की नकली व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध होते हैं, हमारे राष्ट्र में नकली उपाधिधारी व्यक्ति हैं तो उसके भारत के नकली उपाधिधारी व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध होंगे अतः वैसे नकली व्यक्तियों से राष्ट्र को सावधान होना पड़ेगा।

उपसंहार-

तथाकथित काशी पण्डित सभा के जगद्गुरु के सम्बन्ध में लिखी गई बातें प्राज्ञ दधिराज सुवेदी द्वारा लिखित पुस्तक पर आधारित है, उक्त पुस्तक में नेपाल राष्ट्र के प्राचीन सन्त व विद्वानों के नामोल्लेख पूर्वक अपमान भी किया गया है, पैसे के धाक से प्रचार और मनमानी से ग्रस्त होकर सरकार के सहयोग से सन्त-

महन्त, विद्वानों को हीनता से दबाने की बातें अशोभनीय है या अपनी मनमर्जी करना अशोभनीय है। प्रा. दधिराज सुवेदी द्वारा लिखित पुस्तक में बची हुई विज्ञप्ति की आधारभूत सामग्री--

प्राज्ञ दधिराज सुवेदी लिखते हैं-

(१) सभा में लगभग छः सौ जितने आमन्त्रित लोगों की उपस्थिति थी सभी की परम्परा के अनुसार उपस्थित सभासदों को लाल तिलक, दुपट्टा, फूलमाला, मिठाई का थैला आदि द्वारा पूजन करके भारतीय रुपये ५०० दक्षिणा प्रदान करके सन्तुष्ट कराया गया था।

(२) हमारे आस्था पुरुष बालसन्त महाराज किसी भी सम्प्रदाय के व्यक्ति नहीं हैं।

(३) शास्त्रीय प्रमाण की खोज करके चतरा को प्राचीन हरिद्वार बनाया।

(४) संसार के विद्वानों के द्वारा कुम्भ लगाना शास्त्र सम्मत कराकर प्रमाणित कराया।

(५) बालसन्त महाराज अध्यात्म के सगरमाथा हैं। (सर्वोच्च हिमशिखर)

(६) नेपाल सरकार का प्रतिनिधित्व कर रहे उपस्थित संस्कृति मन्त्रालय के उपसचिव प्रकाश दर्लान ने माननीय संस्कृति मन्त्री डा० मनीन्द्र रिजाल की शुभकामना पढकर सुनाई।

गोपालप्रसाद अधिकारी लिखते हैं--

(१) काशी पण्डित सभा ने नेपाल में धर्म संस्कृति एवं परम्परा का उत्थान कैसे करें इस सम्बन्ध में गहन विचार विमर्श

करके विगत ५ वर्षों से प्रतिभा की खोज करने का काम प्रारम्भ किया था काशी पण्डित सभा में सम्पूर्ण नेपाल के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ सम्पर्क करने पर बालसन्त स्वयं की खोजी हुई प्रतिभा मिली।

(२) नेपाल सरकार के संस्कृति मन्त्री डा० मीनेन्द्र रिजाल जी ने नेपाल सरकार की तरफ से काशी पण्डित सभा को पत्र भेजा था। जिसका वाचन पं० पुरुषोत्तम सापकोटाजी ने किया।

(३) पुनः सम्मान में कैसा क्या करें इस विषय में गहन चर्चा परिचर्चा होने लगी। उस बैठक में मात्र जगद्गुरु उपाधि देने का निर्णय हुआ, तदनुसार बैठक ने बालसन्त मोहनशरण देवाचार्य को १००८ जगद्गुरु बनाया ।

भेषराज घिमिरे लिखते हैं-

राष्ट्रपति डा० रामरावण यादव ने कहा अभी मैं संविधान से बँधा हुआ हूँ सरकार की तरफ से होने वाला सहयोग करूँगा। आगामी दिनों में मैं पीछे नहीं हटूँगा।

इन्दिरा रिजाल लिखती हैं--

नेपाल में बहुत सन्त-विद्वान् हुए। आबाल ब्रह्मचारी षडानन्द अधिकारी, स्वर्गद्वारी, महाप्रभु, खप्तड बाबा जैसों ने जगद्गुरु का पद नहीं पाया पर अभी काशी में रहने वाले विद्वानों डा० हरिप्रसाद अधिकारी व डा० गोपालप्रसाद अधिकारी आदि ने बड़ा योगदान देकर बाल सन्त को जगद्गुरु बनाया।

शंकर पौडेल लिखते हैं--

बोलने वाले भगवान् वराह अवतार पूज्य बालसन्त हैं।

विराटनगर में हरिप्रसाद ने कहा-

(१) जगद्‌गुरु की उपाधि प्रदान किये हुये नेपाल राष्ट्र की धरोहर होते हुए वर्तमान राष्ट्र प्रमुख महामहिम राष्ट्रपति डा० रामरावण यादव को औपचारिक रूप में जिम्मेदारी दे दी है। अब उप्रान्त सम्पूर्ण दायित्व नेपाल सरकार का होगा।

(२) ऐसे सन्त का काशी से अभिनन्दन कराना चाहिये। और इस बात को चलाते-चलाते ३-४ वर्ष के बाद तय हुआ। काशी पण्डित सभा को भारत में भी जगद्‌गुरु उपाधि देने के लिए व्यक्तित्व नहीं मिला है। हमारा कहा हुआ मान लेंगे या विश्वास करेंगे तो हमें वैसा व्यक्ति मिल गया है, या हमने ढूंढ लिया है।

भारत राजनीति के द्वारा नेपाल में कुछ नहीं कर सका अब नक़ली जगद्‌गुरु के द्वारा करने की कोशिश कर रहा है किन्तु इसमें भारत सरकार की कोई भूमिका नहीं है, मात्र काशी के पण्डितों की है।

हरिवोल भट्टराई लिखते हैं--

हिन्दुस्तान व नेपाल में कई साधु सन्त हैं पर बहुत अधिक प्रयत्न करने पर भी वैसी उपाधि प्राप्त नहीं कर सके, पर बालसन्त ने प्राप्त करने से हमने अभिनन्दन किया, वैसे में राज्य की तरफ से सहयोग हुआ है। संस्कृति मन्त्री डा० मीनेन्द्र रिजालजी, सचिवों, प्रहरी का आई. जी. पी. सहित सभी की उपस्थिति थी। वैसे ही प्रहरी सुरक्षा का बैण्डबाजा बजाया था। जगद्‌गुरु हमारे राष्ट्र के मात्र नहीं हैं। संसार के पालक व संरक्षक है।

तथाकथित जगद्‌गुरु लिखते हैं--

मैं जगद्गुरु बना हुआ तो एक जिले का, एक क्षेत्र का, एक धर्म सम्प्रदाय का मात्र नहीं हूँ मैं निम्बार्क वैष्णव होने के नाते से निम्बार्क वैष्णव मात्र का जगद्गुरु हूँ ऐसा मत समझना। काशी के विद्वान् पण्डित न तो निम्बार्की हैं न श्रीमार्गी हैं, न बाममार्गी हैं, न दक्षिणमार्गी हैं।

जाने पहचाने कृष्णप्रसाद गुरागाँई सही बात लिखते हैं--प्रथम तो वैसी योग्यता की कमी या अभाव रहेगा, जिसमें वेद, वेदाङ्ग, षड्दर्शन, स्मृति शास्त्रों के माध्यम से अपना दर्शन स्थापनार्थ सम्पूर्ण विद्वानों को शास्त्रार्थ में परास्त करके उन्हीं की सम्मति से जगद्गुरु उपाधि प्राप्त कर सकते हैं। इसमें श्रीशंकराचार्यजी का जगद्गुरु प्राप्ति प्रक्रिया का स्पष्ट उदाहरण लिया जा सकता है।

विशेषः- विज्ञप्ति के द्वारा वस्तुस्थिति से सभी को अवगत करवाने में अवश्य विलम्ब हुआ है। महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करने वाले स्वयं को जगद्गुरु कहते हुये, लिखते हुए चलने वाले ही प्रयाप्त थे किन्तु नेपाल सरकार ही प्रयोग में आकर सर्वसाधारण जनता में मनोवैज्ञानिक दबाव बनाते हुये अतिरंजित रूप में तथाकथित जगद्गुरु को प्रस्तुत करने से तत्सम्बन्धी पूर्ण विवरण प्राप्त करने में अधिक समय लगाना ही विलम्ब का कारण है।

॥ इति श्री ॥